# हिन्दी सप्ताह भर से बात नहीं बनेगी...!

- नन्दिता मिश्रा
विद्यार्थी,
बी.ए.जनसंचार,
सेमेस्टर-3

वक्त बदल रहा है। लोगों का रहन-सहन बदला है। बोलचाल की आम भाषा को लेकर सोच भी बदला है। अंग्रेजी के पीछे दौड़ बेशक पहले ही की तरह तेज है। मगर हिन्दी के प्रति लोगों में अनुराग भी बढ़ रहा है। लोगों में इस बात की स्वीकारोक्ति बढ़ी है कि जितनी जरूरी आंग्ल भाषा है, कुछ उतना ही महत्व भारत की मातृभाषा हिन्दी का भी है। यही वजह है कि हिन्दी अपने पुराने स्वरूप की तरफ पूरी गति से आगे बढ़ने लगी है।

भारत में हिन्दी के प्रति स्नेह बढ़ाने के लिए तमाम उपाय बरसों से हो रहे हैं। चूंकि लोगों में मातृभाषा के प्रति प्यार-सम्मान बढ़ा है, लिहाजा हिन्दी के बढ़ावे के लिए यह बेहतर संकेत हैं। अब तो विदेश से भी हिन्दी सीखने लोग भारत में आ रहे हैं। हमारे हिन्दी के विद्वान विदेश में लोगों को इस भाषा को सिखाने का काम भी कर रहे हैं।

भारत सरकार के साथ सूबे की सरकारें भी हिन्दी के चलन को और सुगम बनाने की कोशिशों में जुटी हुई हैं। नित-नए प्रयास और प्रयोग इस दिशा में हो रहे हैं। अखिल भारतीय सेवाओं के अलावा अब तो मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई को भी हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों के लिए सरल बनाने की कोशिशें तेज हुई हैं। कई सरकारों ने पुस्तकों को हिन्दी में परिवर्तित किया है। सरकार के साथ आमजन की रूचि ने एक नई रोशनी हिन्दी क्षेत्र में जगाई है।

भारत में 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया था। इसके बाद से ही इस दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। सरकारी ही नहीं अब तो गैर सरकारी संस्थानों में भी हिन्दी दिवस पर कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस दिन अधिकारियों को निर्देश दिया जाता है कि वे हिन्दी में ही अपना काम करें। लेकिन वे सिर्फ एक दिन या एक सप्ताह तक ही ऐसा कर पातें हैं। यदि हिन्दी का सम्मान करते हुए, वे हर दिन हिन्दी में ही काम&काज करें, तो न केवल यह बहुत ही गर्व की बात होगी बल्कि हिन्दी भाषा के प्रति वास्तविक सम्मान और उसका मूल स्वरूप लौटाने वाला कदम भी होगा।

सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि संवैधानिक तौर पर तो हमारी राजभाषा हिन्दी ही है, लेकिन आज भी अधिकतर कार्यालयों में अंग्रेजी में काम-काज हो रहा है। सवाल यह उठता है कि क्या वहां काम करने वाले कर्मचारियों को हिन्दी नहीं आती या फिर वे इस भाषा में कार्य करने में खुद को असक्षम पाते हैं? कारण जो भी हों - आज आवश्यकता है कि हिन्दी को विश्व स्तर पर विस्तृत और प्रसारित किया जाए। उसके गुणों का प्रचार -प्रसार किया जाए और उसकी व्यापकता को सबके सामने प्रदर्शित किया जाए।

एक बात पूरी तरह से साफ है - अगर हिन्दी को कम महत्व दिया जा रहा है, तो उसका कारण अंग्रेजी ही है। लोगों में अंग्रेजी का चलन बढ़ रहा है, वे हिन्दी को दरकिनार कर रहे हैं। भारत संस्कृति प्रधान देश है और भाषा संस्कृति का एक हिस्सा। हमारे देश में अंग्रेजी को इतना प्रभावी मान लिया गया है कि उसके लोग उसके आगे अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। इस बात से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और उसे

विकसित करना ही होगा। इस संदर्भ में सरकार द्वारा प्रयत्न किये जा रहे हैं और हिन्दी को लेकर जागरुकता फैलाने का काम भी सरकार कर रही है, लेकिन इस बात को हमें समझना होगा कि हमारे गहन योगदान के बिना बात बनने वाली नहीं है।

बहुत लोगों का मानना है कि हिन्दी भाषा रोज़गार के अवसर नही देती। हालांकि इस तरह की सोच को गलत साबित करते हुए, हिन्दी प्रेमी इस भाषा में पीएचडी तक कर रहे हैं और हिन्दी भाषा के कारण ही उन्होंने बढ़ा मुकाम हासिल करके मिसालें भी पेश की हैं। आज डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिन्दी का उपयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है। यही नही ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में हमारी भाषा के कई शब्दों को जगह दी गई है, जैसे - बापू, चुप, सूर्य नमस्कार आदि। वर्ष 2017 तक भारतीय भाषाओं के लगभग 900 शब्द ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में शामिल थे। वर्ष 2018 में 90 भारतीय शब्दों को इसमें शामिल किया गया। एक तरफ हम देखते हैं कि इंटरनेट के प्रयोग ने संस्कृति का महत्व कम कर दिया है, वहीं इंटरनेट ने हिन्दी को एक ऊँचा स्थान दिया है। इंटरनेट पर हिन्दी सामग्री की खपत 94 प्रतिशत तक बढ़ी है।

हिन्दी भाषा के कई लेखक जिन्हें पहले तो पहचान नही मिली, लेकिन इंटरनेट पर उन्हे पढ़ने वालों का बहुत बड़ा वर्ग अब खड़ा हो चुका है। हिन्दी की यह विशेषता है कि समय के साथ होने वाले परिवर्तन को यह स्वीकार कर लेती है। यही कारण है कि आज भारत ही नही बल्कि, दुनिया के 30 से अधिक देशों में हिन्दी बोली जाती है। भारत देश को स्वतंत्र करने में भी हिन्दी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उस समय देशवासियों को एकजुट रखने का सशक्त माध्यम थी हिन्दी भाषा। स्वतंत्रता के बाद इसका स्वरूप बदलता गया और अंग्रेजी को देश में बनाए रखने का निर्णय लिया गया।

आज के समय में हिन्दी को तकनीकी रूप से अधिक मजबूत करने के लिए सॉफ्टवेयर और शब्दकोश का विकास करना होगा। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का कहना था कि व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा लेनी चाहिए, लेकिन हिन्दी ज़रूर सीखें। उनका मानना था कि हम अपनी भाषा के माध्यम से ही लोगों के दिलों तक पहुँच सकते हैं। जिन लोगों को हिन्दी बोलने में शर्म आती है, उन्हें यह जानना चाहिए कि गूगल के अनुमान के अनुसार वर्ष 2021 में भारत में हिन्दी का उपयोग करने वालों की संख्या, अंग्रेजी उपयोगकर्ताओं से अधिक होगी। आज लगातार हिन्दी का दायरा बढ़ रहा है, ऐसा ही होता रहा तो हिन्दी दिवस सफल माना जाएगा और इसका उद्देश्य पूरा हो जाएगा। (प्रस्तुतिः मनुज फीचर सर्विस)

नोटः मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।